''उसी के नाम से''
(3:12-26)

जन्म होने पर, माता-पिता बच्चों का नाम रखते हैं। बड़ा होने पर, नाम सार्थक और महत्वपूर्ण हो जाते हैं। अन्ततः, हमारे नामों से हमारी केवल पहचान ही नहीं होती, बल्कि उनसे यह भी पता चलता है कि हम क्या बन गए हैं। किसी ऐसे व्यक्ति के नाम पर विचार कीजिए जिसे आप अच्छी तरह जानते हैं। नाम पर विचार करते समय आप उसके नाम के अक्षरों के जोड़ पर ही ध्यान नहीं करते, या करते हैं? बल्कि आप अपने मन में, उस *व्यक्ति* के गुणों पर विचार करने लगते हैं। आपके सामने उसका सज़ूर्ण व्यक्तित्व होता है।[1]

बाइबल में, नामों से व्यक्ति की केवल पहचान ही नहीं होती, बल्कि इससे उस व्यक्ति की सभी विशेषताएं पता चल जाती हैं। निर्गमन 20 में तीसरी आज्ञा थी, कि ''तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा'' (आयत 7)। परमेश्वर ने अपना नाम व्यर्थ लेने वाले के लिए यह अभिशाप क्यों ठहराया? क्योंकि उसके नाम से दुर्व्यवहार करके आप निश्चय ही उसके साथ दुर्व्यवहार करते हैं!

प्रेरितों 3 और 4 अध्याय में यीशु मसीह के नाम पर बल दिया गया है (3:6, 16; 4:7, 10, 12, 17, 18, 30)। यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद ...

> ... परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको *वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है,* कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

प्रेरितों 3 और 4 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि उसके नाम से चंगाई हुई, उसके नाम का प्रचार किया गया, उसके नाम के लिए दुःख उठाया गया और उसके नाम से शक्ति मिली। इन दो अध्यायों का अध्ययन जारी रखते हुए, हम पाएंगे कि यीशु के नाम से केवल उसकी पहचान ही नहीं होती बल्कि उसके नाम में तो उसकी शक्ति, उसके उद्देश्य, और उसका व्यक्तित्व लिपटा हुआ है! इन दो अध्यायों में मुज़्य व्यक्ति पतरस या यूहन्ना, चंगाई पाने वाला आदमी या सभा का कोई सदस्य नहीं है। मुज़्य आकर्षण यीशु मसीह है! यहूदी अगुओं ने समझा था कि उन्होंने यीशु से छुटकारा पा लिया; परन्तु उन्हें अब फिर उससे जूझना पड़ रहा था।

प्रेरितों अध्याय 3 के अन्तिम भाग में, हमें पतरस का दूसरा लिखित संदेश मिलता है, जिसे वह पूरा न कर पाया (ध्यान दें 4:1)। यह पाठ प्रेरितों 2 में दिए गए संदेश की रूपरेखा से बिल्कुल मिलता-जुलता है, परन्तु इसमें समझाने के लिए अलग सामग्री का उपयोग किया गया है।[2] प्रेरितों 2 अध्याय में पतरस ने मुख्यत: दाऊद को उद्धृत किया था; इस संदेश में, उसने पुराने नियम के अन्य स्रोतों से ही हवाले दिए। इस प्रवचन में यीशु के कई ओहदे हैं। प्रेरितों 2 में पतरस ने उसे दाऊद के पुत्र और मसीह के रूप में प्रस्तुत किया था; इस प्रवचन में, पतरस ने यीशु को परमेश्वर का दास, पवित्र और धर्मी जन, जीवन का राजकुमार (रचयिता), और मूसा के जैसा भविष्यवक्ता कहा।

पहचान बनाने से इन्कार (3:12)

अभी तक, लोग पतरस, यूहन्ना और उस भिखारी के आस पास जमा होते जा रहे थे। अन्त में, हर कोई तैयार था और भीड़ शान्त हो गई थी। ''यह देखकर पतरस ने लोगों से कहा, 'हे इस्राएलियो, तुम इस मनुष्य पर क्यों अचम्भा करते हो... ?' '' (आयत 12क)। कालान्तर में, उन्होंने यरूशलेम में यीशु को अक्सर बीमारों को चंगा करते देखा था। चंगाई पाने वाले आदमी की ओर इशारा करते हुए पतरस ने कहना जारी रखा, ''और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो, कि मानो हम ही ने अपनी सामर्थ या भक्ति से इसे चलता-फिरता कर दिया?'' (आयत 12ख)।

यदि पतरस और यूहन्ना इसका श्रेय लेने के लिए बिल्कुल नहीं ललचाए तो अवश्य ही उन्होंने अपने आपको बहुत नम्र कर दिया होगा। अधिक देर की बात नहीं है, वे उन लोगों में से थे जो बहस कर रहे थे कि उन में बड़ा कौन था (मरकुस 9:34)। अब तो उनके पास अवसर था! पतरस द्वारा तुरन्त इस बात से इन्कार करना सुनकर कितना सुखद लगता है कि उनकी शक्ति या भक्ति ने उसे चंगा नहीं किया था और आज के उन तथाकथित चंगा करने वालों में कितना अन्तर है जो खुशामद स्वीकार करने में ज़रा भी हिचकिचाहट महसूस नहीं करते!

समीक्षा दी गई (3:13-15)

पल भर में पतरस ने इस चंगाई का श्रेय यीशु को देना था। इसी की ओर ले जाते हुए, उसने समीक्षा करते हुए (3:13-15) अलग-अलग तुलना करके बताया कि यहूदियों ने यीशु के साथ कैसा व्यवहार किया था। पहली तुलना आयत 13 में मिलती है:

> इब्राहीम और इसहाक और याकूब के परमेश्वर [निर्गमन 3:6,15 में परमेश्वर ने मूसा से अपना यही परिचय दिया था], हमारे बाप दादों के परमेश्वर ने अपने सेवक[3] यीशु की महिमा की, जिसे तुम ने पकड़वा दिया, और जब पीलातुस ने उसे छोड़ देने का विचार किया, तब तुम ने उसके साम्हने उसका इन्कार किया।

यहां पतरस ने यीशु के लिए पहला पदनाम इस्तेमाल किया: *परमेश्वर का सेवक* (इस शब्द का पुन: उपयोग आयत 26 में हुआ है)। यशायाह की पुस्तक के महान विषयों में से एक दु:खी दास[3] ही ऐसा विषय है, जिसकी गूंज भजन संहिता[4] तथा अन्य स्थानों में सुनाई देती है। पतरस अपने सुनने वालों को यह बताना चाहता था कि जिस सेवक के बारे में भविष्यवक्ता बातें करते थे, वह यीशु ही था!

परमेश्वर ने अपने सेवक के साथ क्या किया? उसने उसे ''महिमा दी।'' इसके विपरीत *यहूदियों* ने उसके साथ क्या किया? उनके अगुओं ने उसे पीलातुस के पास ''पकड़वा'' दिया।[5] फिर भीड़ ने उसका ''इन्कार'' किया। जब पीलातुस ने उनसे पूछा, कि ''फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूं?'' तो वे चिल्लाकर कहने लगे थे कि, ''वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।'' हाकिम ने पूछा, ''क्यों, उसने क्या बुराई की है?'' परन्तु वे और भी चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगे थे, ''वह क्रूस पर चढ़ाया जाए!'' (मत्ती 27:22, 23)।

आयत 13 के अन्त में दूसरी तुलना है: एक ओर तो एक अधर्मी रोमी राज्यपाल, पीलातुस ने, यीशु को छोड़ने की कोशिश की। दूसरी ओर, उन्होंने जो कि परमेश्वर के लोग थे, उसकी मृत्यु की मांग की। कम से कम कुछेक ने तो उस घृणित घड़ी को याद करके अवश्य ही फांसी लगा ली होगी।

आयत 14 में पतरस ने तीसरी तुलना और यीशु के दूसरे पदनाम के बारे में बताया है, ''तुम ने उस पवित्र और धर्मी का इन्कार किया, और बिनती की, कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिए छोड़ दिया जाए।'' ''उस पवित्र[6] और धर्मी''[7] के इस दोहरे पदनाम का मूल पुराने नियम की भाषा में है। दुष्ट आत्मा यीशु को ''परमेश्वर का पवित्र जन,'' मानकर उसकी ईश्वरीयता को स्वीकार रहे थे (मरकुस 1:24)।[8] यीशु, जो कि पवित्र और धर्मी है, की तुलना, बरअब्बा से की गई जो एक हत्यारा था। भीड़ ने उस पवित्र और धर्मी के साथ क्या किया? उन्होंने उसका इन्कार किया और उसे क्रूस पर चढ़ाने की मांग की। उन्होंने बरअब्बा का क्या किया, जो एक विद्रोही और हत्यारा था? उन्होंने उसे छोड़ देने की बिनती की (लूका 23:13-25)।

चौथी तुलना आयत 14 के अन्त और आयत 15 के आरम्भ में मिलती है: ''तुम ने बिनती की ... एक हत्यारे को तुम्हारे लिए छोड़ दिया जाए, और जीवन के कर्त्ता को मार डाला ...।'' यूनानी शब्द के अनुवाद ''कर्त्ता'' (आरकिगॉस) का अक्षरश: अर्थ है ''जो पहले है।'' नये नियम में इसका उपयोग चार बार हुआ है। साधारण तौर पर इसका अर्थ है ''जिससे उत्पन्न होता है'' या ''जो पहले जाता है।'' हिन्दी की बाइबल में इसका अनुवाद ''जीवन का कर्त्ता'' के लिए हुआ है। अंग्रेज़ी के न्यू सैन्चुरी वर्ज़न में ''जीवन देने वाला'' है। बरअब्बा जो जीवन लेता था, और यीशु जो जीवन देता था, दोनों में विषमता है। संक्षेप में, पतरस का कहना था कि ''तुमने उसको तो छोड़ दिया जिसने जीवन का नाश किया, और उसको नाश करने का यत्न किया, जो जीवन देता है!''

जी उठने की घोषणा की गई (3:15)

निश्चय ही जीवन देने वाले को मौत के घाट उतारने की कोशिश से नीच कोई कार्य नहीं हो सकता! उनके इस कार्य का घटियापन आयत 15 में, पतरस द्वारा की गई अन्तिम तुलना में मिलता है: ''और तुमने जीवन के कर्त्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया ... ।'' यहूदियों ने यीशु को मार डाला था, परन्तु परमेश्वर ने उसे जिला दिया। ''मनुष्य के लिए कलवरी अन्तिम बात होगी, परन्तु खाली कब्र परमेश्वर का अन्तिम वचन थी।''

ध्यान दें कि पतरस ने अपने सुनने वालों के आरोप पर ज़ोर दिया! लोगों को उनके पाप से मोड़ने से पहले आवश्यक है कि उन्हें उनके पापों का दोष बताया जाए। उद्धार के सुसमाचार को सुनाने से पहले पाप का अशुभ समाचार भी सुनाया जाना चाहिए। चंगा होने की इच्छा करने से पूर्व लोगों को पता होना चाहिए कि उनका रोग क्या है।

जब आयत 15 में पतरस ने पुनरुत्थान की बात की, तो सम्भवत: उसने स्वयं और यूहन्ना की ओर इशारा करते हुए यह भी कहा कि '' ...इस बात के हम गवाह हैं।'' क्योंकि इन्हीं के द्वारा वह आदमी चंगा हुआ था, इसलिए पुनरुत्थान की इनकी गवाही और भी सामर्थपूर्ण थी।

छुटकारा दिलाने वाले को महिमा दी गई (3:16)

जो कुछ भी पतरस ने कहा था, वह सब यीशु के नाम को महिमा देने के लिए ही था: ''और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ दी है; और निश्चय उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इस को तुम सब के साम्हने बिल्कुल भला चंगा कर दिया है'' (आयत 16)। यह वाक्य मूल शास्त्र में और हिन्दी अनुवाद में भी अनुपयुक्त सा लगता है। अनुपयुक्त इसलिए क्योंकि यहां स्पष्टतया पतरस को ज्यों का त्यों उद्धृत करते दिखाया गया है कि उसने क्या कहा और कैसे कहा। बात करते हुए हम हमेशा पूर्ण वाक्य या सही व्याकरण का प्रयोग नहीं करते, और किसी बात को हम दोहरा भी देते हैं। लूका ने आत्मा की प्रेरणा से आयत 16 तक का संपादन किया होगा, परन्तु पतरस के संदेश के मध्य तक पहुंचकर उसने चाहा कि हम पतरस के शब्दों को ज्यों का त्यों ही सुन लें (यह इस बात का प्रमाण है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक के उपदेश न तो लूका की ''कल्पना'' थे, और न ही उसने प्रेरितों के ''मुंह में शब्द डाले'')।

अनुपयुक्त हो या न, पतरस का संदेश शीशे की तरह साफ़ था: वह आदमी पतरस और यूहन्ना में किसी विशेष गुण होने के कारण नहीं; बल्कि *यीशु के नाम से* चंगा हुआ था!

ध्यान दें कि यीशु और उसके नाम पर विश्वास करने पर ज़ोर दिया गया है: यह चंगाई ''उस विश्वास के द्वारा जो उस नाम पर है'' हुई; जिससे वह आदमी ''बिल्कुल चंगा'' हो गया। यहां जिस विश्वास के बारे में बताया गया है वह चंगाई पाने वाले का नहीं (जैसे हमने पहले टिप्पणी की थी कि, उसे तो चंगा होने की कोई उम्मीद ही नहीं थी) बल्कि यहां *पतरस*

और यूहन्ना के विश्वास की बात है। पहले भी, जब प्रेरित दुष्टात्मा को नहीं निकाल सके थे, तो यीशु ने कहा था कि इसका कारण *उनके* विश्वास का कम होना था, दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति का कम विश्वास नहीं (तु. मत्ती 17:20)। जब अपने जी उठने के बाद यीशु ने ग्यारह चेलों को दर्शन दिए तो उसने, ''उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया'' था (मरकुस 16:14)। उन्हें ग्रेट कमीशन अर्थात महान आज्ञा देने के बाद उसने उनसे कहा:

> और *विश्वास करने वालों में* ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। नई-नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे (मरकुस 16:17, 18)।

यीशु ने कहा कि यदि प्रेरित विश्वास करते, तो उन्होंने ''मेरे (अर्थात यीशु के) नाम से'' बीमारों को चंगा करने के योग्य हो जाना था। प्रेरितों 3 अध्याय में बिल्कुल ऐसा ही हुआ।

आइये पतरस के मूल विचार पर ध्यान दें: क्योंकि कोई भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकता था कि वह आदमी आश्चर्यकर्म के द्वारा चंगा हुआ था, और क्योंकि वह आदमी यीशु के नाम से चंगा हुआ था, इसलिए अवश्य है कि यह यीशु ही मसीहा था! मुज्य बात वही है जो पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के संदेश में थी: यहूदियों ने उसी को मार दिया जिसकी राह वे युगों से देख रहे थे!

पुनःआश्वासन बढ़ाया गया (3:17, 18)

इससे पहले कि वे अपने दोष से और परेशान हों, पतरस ने जल्दी से उन्हें यह कह दिया, ''और अब, हे भाइयो मैं जानता हूं कि यह काम तुम ने अज्ञानता से किया, और वैसा ही तुज्हारे सरदारों[9] ने भी किया'' (आयत 17)। पतरस उनसे बड़ी नम्रता से पेश आ रहा था। (अपनी बात को सही ठहराने के लिए हमें प्रतिरोधी होने की आवश्यकता नहीं है; पुरुषोचित दिखाने के लिए चिड़चिड़ा होना आवश्यक नहीं।) उसके कहने का अभिप्राय यह था कि ''यदि सचमुच आपको पता होता कि यीशु कौन था, तो मुझे नहीं लगता कि आप उसे मार सकते थे।'' पतरस के इस कथन को गलत मत समझें। वह यह नहीं कह रहा था कि यीशु को जानने का उन्हें कोई अवसर नहीं मिला; यह अज्ञानता तो सब कुछ जानते हुए थी जिसका कारण उनकी अपनी पूर्वधारणा थी। वह यह भी नहीं कह रहा था कि अज्ञानता के कारण वे कम दोषी हैं; संक्षेप में, उसने उन्हें मन फिराने की आज्ञा दी। बल्कि पतरस कह रहा था कि उन्होंने ''अज्ञानता में ऐसा किया,'' इसलिए उनके लिए *आशा* थी। व्यवस्था के अधीन अज्ञानता में किए पाप और जानबूझ कर किए पाप में अन्तर किया जाता था (लैव्यव्यवस्था 4; 5; गिनती 15:22-31)। अज्ञानता में किए पापों के लिए बलिदान दिए

जा सकते थे; ऐसे पाप क्षमा हो सकते थे। दूसरी ओर, जानबूझ कर किए गए पाप के लिए कोई बलिदान नहीं दिया जा सकता था।[10] विद्रोह करने वाले को अपने लोगों में से ''निकाल'' दिया जाता था; आमतौर पर ऐसे व्यक्ति को पथराव करके मार दिया जाता था। पतरस की बातों से उनके लिए आशा बंधी: ''यह काम तुमने अज्ञानता में किया।''

परन्तु वे अधिक देर तक अज्ञानता के पर्दे के पीछे छिपे नहीं रह सकते थे। पतरस ने कहना जारी रखा, ''परन्तु जिन बातों को परमेश्वर ने सब भविष्यवक्ताओं के मुख से पहले ही बताया था, कि उसका मसीह दुःख उठाएगा; उन्हें उसने इस रीति से पूरी किया'' (आयत 18)। यदि उन्होंने भविष्यवक्ताओं की बातों को समझा होता तो उनकी अज्ञानता मिट जाती। उन्हें पता चल जाता कि मसीहा को दुःख उठाना ही था। दुख सहकर यीशु मसीहा बनने के अयोग्य नहीं हो गया; बल्कि यह तो उसकी योग्यता का अति महत्वपूर्ण भाग था।[11]

मन फिराने की आवश्यकता (3:19)

भविष्यवक्ताओं के बारे में बताने से पहले, पतरस ने अपने सुनने वालों को मन फिराने और परमेश्वर की ओर मुड़ने की चुनौती दी: ''इसलिए, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं जिस से प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं'' (आयत 19)।

12 से 26 आयतों तक अध्ययन का आरम्भ करते समय, मैंने ध्यान दिलाया था कि यह एक अधूरा संदेश है। अध्याय 4 की पहली आयत बताती है कि, ''*जब* वे लोगों से यह कह रहे थे,'' तो पतरस और यूहन्ना को गिरफ़्तार कर लिया गया। इस बार पतरस के पास समय नहीं था कि वह लोगों को यीशु की ओर मोड़ने के लिए उसी प्रकार बता सके जैसे उसने 2:38 में बताया था।[12] 3:19 में पतरस के प्रारम्भिक वाक्य की 2:38 में प्रयुक्त उसके निर्णायक वाक्य से तुलना करना शिक्षाप्रद होगा:

प्रेरितों 2:38	**प्रेरितों 3:19**
''मन फिराओ,	''इसलिए, मन फिराओ
और तुम में से हर एक ... यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले;	और लौट आओ,
अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए	कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं,
तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।''	जिस से प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं''

आमने-सामने रखने पर, दोनों आयतों में कई समानताएं तुरन्त स्पष्ट हो जाती हैं। पहली समानता यह है कि, दोनों आयतें ''मन फिराओ'' की आज्ञा से आरम्भ होती हैं। ''मन फिराने'' का अर्थ है कि पाप के कारण आने वाले दुःख के कारण, हम पाप के प्रति

अपना रुख बदलकर उससे अलग प्रकार का जीवन जीने का निश्चय करते हैं।[13] द न्यू सैन्चुरी वर्ज़न में ''इसलिए तुम अपने मनों और जीवनों को बदल डालो'' है। पतरस ने साबित कर दिया था कि उसके सुनने वालों ने ही परमेश्वर के सेवक, पवित्र और धर्मी जन, जीवन के रचयिता को मार डाला था। अब, उनके लिए सब से महत्वपूर्ण और पहला कार्य अपने उस घृणित पाप से मन फिराना था!

फिर, 3:19 के तीसरे भाग को देखें। ''कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं।'' यहां जो आकृति बनाई गई है, उसे लिखने के पुरातन ढंग को ध्यान में रखकर बनाया गया है। उन दिनों इस्तेमाल होने वाली स्याही में तेज़ाब नहीं होता था और वह आधुनिक स्याही की तरह कागज़ [जो विशेष तौर पर पेपीरस के डंठलों से बनता था] को काटती नहीं थी। इसलिए लिखावट ऊपरी सतह पर ही रहती थी और उसे चाकू से या गीले स्पंज के साथ मिटाया या पोंछा जा सकता था।[14] किसी के पाप ''मिटाए जाना'' का अर्थ था परमेश्वर की स्मृति-पुस्तक में से उनको निकाल देना! इसका अर्थ भी 2:38 में ''पापों की क्षमा के लिए'' के समान ही है।

क्योंकि दोनों आयतों में (यहां अंग्रेज़ी की बाइबल के अनुसार दिया गया है, हिन्दी में वाक्य रचना में वाक्यांश का स्थान बदल जाता है) पहली और तीसरी अभिव्यक्ति का अर्थ एक समान मिलता है, इसलिए बहुत संभव है, कि दूसरी और चौथी अभिव्यक्ति का भी आपस में सम्बन्ध हो। दोनों आयतों में दूसरी अभिव्यक्ति पर ध्यान दें। प्रेरितों 2:38 में, ''तुम में से हर एक ... यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'' है, जबकि प्रेरितों 3:19 में साधारण रूप में ''लौट'' आने की आज्ञा है।[15] यहूदियों ने यीशु को अस्वीकार करके अपने आपको परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्य से दूर कर लिया था। अब केवल वे यीशु को ग्रहण करके ही प्रभु की ओर लौट सकते थे।[16] क्या लौट आने और बपतिस्मा लेने की आज्ञा के बीच कोई समानता है? उन्हें ''यीशु मसीह के नाम से'' बपतिस्मा दिया जाना था। उनके बपतिस्मा लेने से यह पता चलता है कि वे यीशु में विश्वास करते थे और उन्होंने यीशु को मसीहा मान लिया है। दोनों आयतों में समानता से पता चलता है कि प्रभु की ओर लौटने के लिए बपतिस्मा लेना मन परिवर्तन का एक अनिवार्य भाग है!

अन्त में, आइए दोनों आयतों में चौथी अभिव्यक्ति को देखें। प्रेरितों 2:38 में ''तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' है जबकि 3:19 में ''जिस से प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं''। वाक्यांश ''विश्रान्ति के दिन'' प्रभु की ओर से अपने बच्चों को दी जाने वाली आत्मिक आशिषों को कहा गया है,[17] विश्रान्ति की आशिषें ''प्रभु के सन्मुख'' से आती हैं (अर्थात प्रभु के हमारे साथ होने के कारण)। 2:38 के अनुसार जब हम बपतिस्मा लेते हैं, तो परमेश्वर हमें अपना आत्मा देता है, और उसका आत्मा हमारे अन्दर निवास करता है![18] ''आत्मा से परिपूर्ण'' (इफिसियों 5:18) होकर हमारे प्राण ''विश्रान्ति (आत्मिक शान्ति) के दिनों'' को महसूस करते हैं। यूहन्ना 7:37-39 में पवित्र आत्मा के दान की तुलना ''जीवन के जल की नदियों'' से की गई है। कई लोगों को मसीहियत बोझ लगती है; किन्तु पतरस ने कहा कि यह तो आशीष है!

इन दोनों आयतों को इकट्ठा करने पर, हमें दो महान सच्चाइयों का पता चलता है: यदि हम मन फिराकर परमेश्वर की ओर लौट आएं, जिसमें बपतिस्मा लेना भी शामिल है तो हमारे पाप क्षमा किये (मिटाए) जाएंगे, और परमेश्वर हमारे अन्दर आकर हमारे प्राणों को आशीष व विश्रान्ति देगा। 3:19 में पतरस के पास उसे सुनकर यीशु की ओर लौटने वालों के लिए अति आकर्षक आशिषें थीं!

सुधार का वायदा दिया गया (3:20, 21)

हमने दो आशिषों पर ध्यान दिया है: पापों का मिटाया जाना और विश्रान्ति के दिन।[19] 20 और 21 आयतों में पतरस ने एक और तीसरी आशीष भी जोड़ दी: ''और वह उस मसीह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिए पहिले ही से ठहराया गया है,[20] अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर ले जिसकी चर्चा परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुख से की है, जो जगत की उत्पत्ति से होते आए हैं।'' तीसरी आशीष, जिसका पतरस ने उल्लेख किया, वह यीशु का द्वितीय आगमन है! शायद आप और मैं प्रभु के लौटने की बात से इतने रोमांचित न हों, परन्तु आरज़्मिक मसीही उस दिन की प्रतीक्षा बड़ी बेसब्री से कर रहे थे। *कष्ट* सहते हुए, वे उस दिन की राह देख रहे थे जब मसीह ने वापस आकर सब कुछ ठीक कर देना था!

''उस समय तक ... जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर ले'' पर काफ़ी गलतफहमी पाई जाती है। इस बारे में कई अनुमान लगाए गए हैं कि पतरस के कहने का क्या अर्थ था। कई लोगों का दावा है कि *जब तक* सारी मनुष्यजाति परमेश्वर की ओर नहीं लौटती और आत्मिक सुनहरा युग अस्तित्व में नहीं आता, तब तक मसीह वापस नहीं आएगा।[21] कई लोगों का कहना है कि यीशु वापस आने पर धरती को सुधारकर, इसे स्वर्गलोक बना देगा।[22] परन्तु, पतरस, यहां भविष्य के बारे अचज़्भित करने वाले किसी नए प्रकाश की बात नहीं कर रहा था; ''सब बातों का सुधार'' होने की बात करके, उसने उन दिनों प्रचलित यहूदी मुहावरे का प्रयोग किया।

पतरस के यहूदी श्रोताओं के लिए,[23] ''सब बातों का सुधार'' *मसीह के स बन्ध* में पारिभाषिक शब्दावली थी। जब मसीहा आएगा, तो वह सब कुछ ठीक कर देगा। इसका यह अर्थ नहीं कि जिन्होंने पतरस को सुना वे समझ ही गए कि सुधार का क्या अर्थ है। उन प्रेरितों की तरह ही जिन्होंने पूछा था, ''हे प्रभु क्या तू इसी समय *इस्राएल का राज्य फेर देगा?*'' (1:6) उनके मन में भी अस्थायी, भौतिक, और कौमी सुधार की बात थी। वे इस्राएल की उसी महिमा के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो दाऊद और सुलैमान के राज्य के समय थी। पतरस का उद्देश्य उनकी गलतफहमियों[24] को दूर करना नहीं था बल्कि, वह उन्हें यह बताना चाहता था कि यदि वे यीशु का मसीहा होना मान लेते हैं, तो उसके वापस आने पर, मसीह से सज़्बन्धित सभी न्यायसंगत आशाएं और स्वप्न[25] पूरी तरह से और अन्तिम रूप में साकार हो जाएंगे![26] जीवनभर मसीहा के आने की राह देखने वालों के लिए यह कितनी ज़बरदस्त प्रेरणा होगी।

यहूदी श्रोताओं के लिए 20 और 21 आयतों के पतरस के शब्दों में यही विशेष है। जिन मसीहियों को बाइबल की पूर्ण शिक्षा का लाभ मिला है, उनके लिए इनका क्या अर्थ है? पतरस के शब्दों में आधारभूत सच्चाई पर ज़ोर दिया गया है कि मसीह के वापस आने तक सब कुछ ठीक नहीं होगा। *कुछ* बातों में सुधार अब भी हो गया है, परमेश्वर ने हमारे पाप क्षमा कर दिए हैं; वह हमारे साथ है और जीवन की परीक्षाओं में हमारी सहायता करता है, परन्तु *सब* कुछ ठीक नहीं है। हम पाप से भरे संसार में रहते हैं। अक्सर दुष्ट लोग फलते-फूलते व समृद्ध होते हैं, जबकि धर्मी लोग कष्ट उठाते हैं। बुराइयां तो हैं और प्रभु के वापस आने तक भी रहेंगी। उसके आने पर, ''सब बातों का सुधार हो जाएगा।''[27]

''सब बातों का सुधार ... '' वाक्यांश की बेहतर व्याज़्या के लिए उत्पत्ति की पुस्तक के आरज़्भिक अध्यायों की तुलना प्रकाशितवाक्य के अन्तिम दो अध्यायों में स्वर्ग की तस्वीर के साथ करनी चाहिए। उत्पत्ति में, मनुष्य परमेश्वर के साथ चलता था जब तक कि पाप ने उसे अपने बनाने वाले से अलग नहीं किया; प्रकाशितवाक्य 21:3 में, वह गूढ़ सज़्बन्ध फिर से सुधर जाता है। उत्पत्ति में, मनुष्य को जीवन के वृक्ष के फल तक पहुंचने से रोक दिया गया था; प्रकाशितवाक्य 22:2 में, जीवन के वृक्ष पर मनुष्य को फिर से अधिकार मिल जाता है। उत्पत्ति में स्वर्गलोक छिन जाता है; प्रकाशितवाक्य 22:1, 2 में, स्वर्गलोक पुन: प्राप्त हो जाता है। उत्पत्ति में, मृत्यु संसार में विपत्ति लेकर आती है; प्रकाशितवाक्य 21:4 में, मृत्यु जाती रही। जब यीशु अपने लोगों को अपने पास ले जाने के लिए वापस आएगा (यूहन्ना 14:3) तो जो कुछ सुधारने के योग्य होगा,[28] उसे आज्ञा मानने वालों[29] के लिए सुधारा जाएगा। प्रभु के वापस आने पर सदैव तैयार रहने के लिए कितनी ज़बरदस्त प्रेरणा है!

एक उद्धारकर्त्ता की भविष्यवाणी (3:22-24)

पतरस ने भविष्यवक्ताओं का उल्लेख कई बार किया था (आयत 18, 21)। इसके बाद उसने मूसा से आरज़्भ करके कई भविष्यवक्ताओं के बारे में बताया, जिन्होंने मसीह के आने के बारे में बताया था:[30]

> जैसा कि मूसा ने कहा, ''प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझ सा एक भविष्यवक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कहे, उस की सुनना, परन्तु प्रत्येक मनुष्य जो उस भविष्यवक्ता की न सुने, लोगों में से नाश किया जाएगा'' (आयतें 22, 23)।

व्यवस्थाविवरण 18 और लैव्यव्यवस्था 23 से लिए गए इन शब्दों[31] से पतरस के श्रोता परिचित थे। यहूदी लोग ''उस भविष्यवक्ता'' के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसने मूसा की तरह ही, उनका अगुआ, व्यवस्था देने वाला, शासक और छुटकारा दिलाने वाला होना था।[32] जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आया तो, उन्होंने उससे पूछा, ''तो क्या तू वह भविष्यवक्ता है?'' (यूहन्ना 1:21)। जिन्होंने यीशु को पांच हज़ार लोगों को खिलाते देखा

था, वे कहने लगे, ''कि वह भविष्यवक्ता जो जगत में आने वाला था निश्चय यही है'' (यूहन्ना 6:14)। पतरस ने ज़ोर देकर कहा होगा कि यीशु ही वह भविष्यवक्ता *था,* और फिर उसने ये शब्द कहे होंगे, ''प्रत्येक मनुष्य जो उस भविष्यवक्ता की न सुने, लोगों में से नाश किया जाएगा।'' यदि वे यीशु को गम्भीरता से नहीं लेते, तो उनका नाश हो जाना था!

इसके बाद, पतरस ने उस उद्धारकर्त्ता के बारे में अन्य भविष्यवक्ताओं की शिक्षा का संक्षेप में सर्वेक्षण किया: ''और सामुएल से लेकर[33] उसके बाद वालों तक जितने भविष्यवक्ताओं ने बात कहीं उन *सब* ने इन दिनों का संदेश दिया है'' (आयत 24)। जब शमुएल ने दाऊद का अभिषेक किया और उसके राज्य की स्थापना[34] के बारे में बताया, तो उसका इशारा 2 शमूएल 7:8-17 में दाऊद के साथ मसीह के सम्बन्ध में परमेश्वर की प्रतिज्ञा की ओर था। शमूएल के ''उत्तराधिकारियों'' के सम्बन्ध में पतरस एक के बाद एक हवाला दे सकता था।[35] पुराने नियम में तीन सौ से अधिक भविष्यवाणियां यीशु के बारे में ही बताती हैं!

प्रकाशन में रुकावट (3:25, 26)

अब तक, उस लंगड़े आदमी के चंगा होने और उसके बाद की घटनाओं की ख़बर यहूदी अधिकारियों तक पहुंच चुकी थी, और वे पतरस के संदेश को रोकने के लिए अन्यजातियों के आंगन की ओर जाने के लिए उतावले थे। पतरस के संदेश के पूरा होने में केवल कुछ ही क्षण रह गए थे। अपने अन्तिम शब्दों में, पतरस ने अपने सुनने वालों को इसकी प्रासंगिकता बताई। आयत 25 और 26 में पतरस ने कम से कम पांच बार, मध्यम पुरुष ''तुम/तेरे'' या ''तुम्हारे'' का उपयोग किया। इस आयत की भावना को समझने के लिए, शब्द ''तुम'' और ''तुम्हारे'' पर ज़ोर देते हुए इसे ऊंचे स्वर में पढ़ें।

पतरस ने ''*तुम* भविष्यवक्ताओं की संतान'' हो कहकर आरम्भ किया (आयत 25क)। पुराने नियम में वाक्यांश ''भविष्यवक्ताओं की संतान'' उनके लिए प्रयुक्त होता था, जो भविष्यवक्ता की शिक्षा पाने के लिए नबियों की पाठशाला में होते थे। तथापि, पतरस ने ये शब्द अपने सुनने वालों के लिए इस्तेमाल किए जो कि आत्मिक रूप से भविष्यवक्ताओं की संतान थे, बिल्कुल उसी प्रकार जैसे पुत्र कानूनी और शारीरिक रूप में अधिकारी होते हैं। ये यहूदी ही थे, जिनके नाम परमेश्वर के वक्ताओं ने मसीह से सम्बन्धित भविष्यवाणियां लिखीं। सैकड़ों भविष्यवाणियां, यीशु पर चमकते प्रकाश-पुंज के समान थीं और यहूदी अभी भी उसे देख सकने में असमर्थ थे!

फिर पतरस ने उस वाचा के कारण जो बहुत पहले उनके साथ बांधी गई थी उन्हें यहूदी होने का एक और लाभ बताया, ''*तुम* ... संतान और उस वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने *तु हारे* बाप दादों से बांधी, जब उस ने इब्राहीम से कहा, कि 'तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने[36] आशीष पाएंगे' '' (आयत 25)। यह वायदा उत्पत्ति 22:18 से उद्धृत किया गया लगता है; इसमें यीशु के आने के संबंध में कहा गया है। बाद में पौलुस ने उत्पत्ति 22 को उद्धृत करते हुए कहा ''निदान, प्रतिज्ञाएं इब्राहीम को और उसके वंश को दी गईं: वह यह नहीं कहता, कि 'वंशों को' जैसे बहुतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि 'तेरे

वंश को:' और वह *मसीह* है'' (गलतियों 3:16)। पतरस के श्रोता उत्पत्ति 22 में दिए गए वायदे से अनभिज्ञ नहीं थे। मसीह के आने पर सब लोगों को चाहिए था कि उसे पहचान लें, परन्तु वे उसे नहीं पहचान सके।

यहूदियों ने परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं की परवाह नहीं की और परमेश्वर के वायदों की अवहेलना की। उन्हें त्यागने का परमेश्वर को पूरा अधिकार था, परन्तु उसने उन्हें त्यागा नहीं। पतरस ने घोषणा की कि परमेश्वर तो अनुग्रह करने वाला परमेश्वर है। उसने अपने वायदे के लोगों के लिए सब कुछ कर लिया था। उसने यहूदियों को दूसरा अवसर दिया था: ''परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर पहले *तु हारे* पास भेजा, कि *तुम* में से हर एक को उसकी (अर्थात *तु हारी*) बुराइयों से फेरकर आशीष दे'' (आयत 26)। ''पहले'' शब्द में यह अर्थ निहित था कि अन्यजातियों को भी परमेश्वर की आशिषें मिलने को थीं,[37] परन्तु इस आयत में ज़ोर दिया गया है कि परमेश्वर ने पुनरुत्थान के द्वारा *यहूदियों को* आशीष देनी थी, कि यीशु को संसार में *यहूदियों को* उनकी बुराइयों से मोड़ लाने के लिए भेजा गया। इस आयत के निजी बल देने पर ध्यान दें: ''*तुम में से हर एक* को उसकी (अर्थात तुम्हारी) बुराइयों से फेरकर आशीष दे।'' राष्ट्रीय नवीकरण निजी सुधार होने पर सम्भव था।[38]

पतरस के लिए आयत 19 की अपील को ''बहुत और बातों से'' (2:40) विस्तार से बताने के लिए दोहराना स्वाभाविक ही था, ताकि वे यीशु पर भरोसा करके उसकी आज्ञा मानने के लिए मुड़ आएं। परन्तु, उस अवसर का उसे लाभ नहीं मिला क्योंकि, ''जब वे लोगों से यह कह रहे थे, तो याजक और मन्दिर के सरदार और सदूकी उन पर चढ़ आए, ...और उन्होंने उन्हें पकड़कर हवालात में रखा'' (4:1-3)।

यहूदी अगुवे प्रेरितों को तो कैद में डाल सकते थे, लेकिन उनके वचनों को नहीं। अगली आयत हमें बताती है, ''परन्तु वचन के सुनने वालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और उनकी गिनती पांच हज़ार पुरुषों के लगभग हो गई'' (4:4)। मुझे लगता है कि उन पांच हज़ार लोगों में वह भिखारी भी था जिसे अन्ततः न केवल शारीरिक चंगाई ही मिली थी, बल्कि आत्मिक चंगाई भी दी गई थी।

सारांश

अगले पाठ में, हम पतरस और यूहन्ना के महासभा के सामने पेश होने के वृत्तांत को देखते हुए ''यीशु के नाम'' पर बल देना जारी रखेंगे। परन्तु, अब यहीं बन्द करते हुए, मैं उस समानता पर ध्यान देना चाहता हूं जो अध्याय 3 के आरम्भ में पतरस और यूहन्ना ने लंगड़े व्यक्ति को ठीक करते हुए की और अध्याय के अन्तिम भाग में मिलती है, जिसे वे प्रचार करते हुए[39] करने की कोशिश कर रहे थे। अध्याय 4 में इन दोनों के सम्बन्ध का पता चलता है, जब पतरस बताता है कि वह व्यक्ति लंगड़ा ही पैदा हुआ था:

> इस दुर्बल मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है, यदि आज हम से उसके विषय में पूछ-पाछ की जाती है, कि वह क्योंकर *अच्छा* हुआ, तो तुम सब और सारे

> इस्राएली लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, उसी नाम से यह मनुष्य तुम्हारे साम्हने भला चंगा खड़ा है ... और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम *उद्धार* पा सकें (4:9, 10, 12)।

आपको इसका हिन्दी के स्थानीय अनुवाद से पता नहीं चलेगा, परन्तु आयत 9 में शब्द ''अच्छा हुआ'' और आयत 12 में शब्द ''उद्धार पाए'' का मूल शब्द एक ही है। पतरस अपने सुनने वालों को बताना चाहता था कि यीशु, जिसने उस भिखारी को शारीरिक चंगाई दी वह उन्हें आत्मिक चंगाई दे सकता है। ऐसे भी कहा जा सकता है कि जिस यीशु ने लंगड़े आदमी को शारीरिक बीमारी से छुड़ाया, वह उन्हें पाप की आत्मिक बीमारी से भी बचा सकता है। ये यहूदी उस लंगड़े के पास से हर रोज़ गुज़रते थे और यकीनन उन्हें उसकी विकृत टांगें देखकर उस पर तरस आता होगा; पतरस उन्हें यह अहसास कराना चाहता था कि उनके मन उस भिखारी की टांगों के समान ही टेढ़े, विकृत थे, अविकसित, और दुर्बल हो चुके थे। अन्य शब्दों में, बहुत से मनुष्यों की *आत्माओं* को चंगाई देने के लिए एक आदमी के *शरीर* को चंगा किया गया। यदि आपने अब तक अपनी आत्मा चंगा होने के लिए प्रभु को नहीं दी, तो *अब समय* है।

विजुअल-एड नोट्स

2:38 और 3:19 में समानता को बोर्ड या चार्ट पर दिखाया जा सकता है। पापों ''को मिटाया जाना'' को बोर्ड पर शब्द ''पाप'' को मोटा लिखकर मिटाने से समझाया जा सकता है। ''मिटाया जाना'' को एक और ढंग से समझाया जा सकता है: एक छोटी ''पट्टी'' बनाने के लिए बच्चों की मॉडलिंग क्ले का उपयोग करें। इस पर कुछ लिखें, फिर उसे मिटा दें। इसे समझाने के लिए एक और दिलचस्प ढंग है। यदि आपके यहां से बच्चों की स्लेट मिल सके तो, उसके साथ मिली सलेटी से उस पर ''पाप'' मोटा करके लिखें; फिर उसे हाथ से या कपड़े से रगड़ें, लिखा हुआ मिट जाएगा।

प्रवचन नोट्स

मैंने सुझाव दिया है कि हमारे पास प्रेरितों 2 और 3 के संक्षिप्त प्रवचन हैं, और यह कि दोनों की सामग्री किसी अन्य संदेश में भी मूल प्रचार में प्रयुक्त की गई होगी। (लूका ने आम तौर पर अपनी सूचना की पुन: नकल नहीं की; स्पष्टतया जिस सामग्री को वह पुस्तक में बाद में प्रस्तुत करने की योजना बना रहा था उसे, उसने रोक लिया)। प्रेरितों 2 और 3 में संदेश और शायद प्रेरितों 4 और 10 में दिए गए संदेश को *मिलाकर* ''सुसमाचार जिसका प्रचार पतरस ने किया'' पर एक पाठ तैयार हो सकता है। टिप्पणियां कम से कम दी जाएं, केवल

आवश्यकतानुसार व्याज़्यात्मक टिप्पणियां ही हों। यह पाठ सामर्थपूर्ण होना चाहिए जैसे कि पतरस (आपके द्वारा) प्रचार कर रहा हो, जिसने हज़ारों लोगों को मोड़ दिया!

''मूसा के जैसा एक भविष्यवक्ता'' पर एक दिलचस्प प्रवचन दिया जा सकता है (व्यवस्थाविवरण 18:15, 18, 19; लैव्यव्यवस्था 23:29; प्रेरितों 3:22, 23)। इब्रानियों की पुस्तक पर अपनी व्याज़्या में, कॉफ़मैन ने उन्नीस ढंग बताए हैं कि यीशु मूसा के जैसा था और तेरह ढंग बताए हैं कि वह मूसा के जैसा नहीं था (कॉफ़मैन, *कमैन्ट्री ऑन हिब्रियूज़*)।

पादटिप्पणियां

[1]यदि उपयुक्त हो, तो आप किसी प्रेम रोगी लड़के या लड़की का हवाला दे सकते हैं जो अपने प्रेमी का नाम बार-बार लिखता जाता है। उस के लिए नाम केवल अक्षरों का जोड़ ही नहीं है; उसके लिए तो इनसे उसके दिल की धड़कन को गति मिलती है। [2]प्रेरितों 2 और 3 के संदेश को एक दूसरे के पूरक के रूप में समझा जाना चाहिए। अन्य शब्दों में, हो सकता है कि पतरस ने दोनों के संदेश में कुछ मिलती-जुलती सामग्री का प्रयोग किया हो, परन्तु एक बार लिख दी गई जानकारी को दोहराना लूका की आदत नहीं थी। [3]यशायाह 53. प्रेरितों 8 में कूश देश के मंत्री को फिलिप्पुस के संदेश पर ध्यान दें। [4]भजन संहिता 22. हमारे पास तो पतरस के संदेश का संक्षिप्त रूप है, हो सकता है कि वह यहां रुक गया हो और उसने यशायाह और दाऊद के कुछ प्रसिद्ध हवालों को उद्धृत किया हो। [5]उन्होंने छुड़ाने वाले को ही पकड़वा दिया! [6]पवित्र का अर्थ है ''अलग किया हुआ।'' मनुष्यों के लिए प्रयोग करने पर, इसका अर्थ होता है कि परमेश्वर ने अपने बच्चों को अपने विशेष उद्देश्य के लिए अलग किया है। परमेश्वर के लिए प्रयोग करने पर इसका अर्थ होता है कि परमेश्वर की सज़्पूर्णता ने उसे शेष सृष्टि से अलग रखा है। [7]''धर्मी'' उसे कहा गया है जिसके विरुद्ध कोई आरोप और कोई अभियोग नहीं लगाया जा सकता। [8]यूहन्ना 6:69 में पतरस ने भी यीशु को ''परमेश्वर का पवित्र जन'' कहा। [9]सरदारों की अज्ञानता पर, देखिए प्रेरितों 13:27; 1 कुरिन्थियों 2:8. [10]इब्रानियों 10:26 पर ध्यान दें। इब्रानियों की पत्री का लेखक इस प्रकार के पापों को ''जान बूझ कर'' किए पाप कहता है।

[11]पतरस के पहले उपदेश में यह मुज़्य बात थी, क्योंकि यीशु को मसीह स्वीकार करने में यहूदियों के लिए क्रूस एक बड़ी बाधा थी। [12]कुछ लेखक टिप्पणी करते हैं कि वास्तव में ऐसा करना आवश्यक नहीं था,क्योंकि पिन्तेकुस्त के दिन से, यरूशलेम में यहूदी प्रतिदिन मसीह का अंगीकार करते और बपतिस्मा ले रहे थे (2:38, 41, 47)। [13]शब्दावली में देखिए ''मन फिराव।'' [14]लोग मिट्टी और मोम की पट्टियों पर तीखी छड़ियों से भी लिखते थे। ऐसी लिखावट को सतह को समतल करके ''मिटाया'' जा सकता था। [15]KJV में ''be converted (अर्थात बदल जाओ)'' है। इस तथ्य के बावजूद कि यह एक आज्ञा है, कइयों ने यह ज़ोर देते हुए कि ''यह कर्म वाच्य में है, इसलिए इसमें ऐसा कुछ नहीं है जिसे *हम* करें, बल्कि, यह तो परमेश्वर के करने के लिए है शब्द ''be'' पर कब्ज़ा कर लिया है। आइए पीछे बैठ जाएं और सब कुछ परमेश्वर को करने दें।'' ''लौट आओ'' ''बदल जाओ (be converted)'' से बेहतर अनुवाद है क्योंकि इससे गल्त अर्थ नहीं मिलता। ''लौट आओ'' के लिए मूल यूनानी शब्द एक मिश्रित शब्द है जिसका अक्षरश: अर्थ है ''की ओर मुड़ना।'' [16]मूल में यह नहीं है कि उन्हें किसकी ओर लौटना था, परन्तु यह स्पष्ट लगता है कि उन्हें *प्रभु की ओर* मुड़ने के लिए कहा गया था (ध्यान दें 11:21). [17]इसका आरज़्भ पापों की क्षमा के साथ होगा। हमारे प्राणों को छेदने वाले भयंकर आरोप से छुटकारा पाना अद्‌भुत ''विश्रांति का समय'' है। परन्तु, ये ''विश्रांति के दिन'' हमारे मसीही जीवन में भी बने रहते हैं। जब हम किसी समस्या से जूझते हैं और अन्त में उसे प्रभु के हाथ में सौंप देते हैं, तो हमारे मन को कितनी शान्ति मिलती है! यदि आप इस सामग्री को क्लास में इस्तेमाल करते हैं, तो आप क्लास के सदस्यों से कह सकते हैं कि वे अपने-अपने अनुभवों को बताएं कि उनकी आत्माओं को कब परमेश्वर की ओर से

''विश्रांति'' मिली। [18]''प्रेरितों के काम में पवित्र आत्मा का काम (2): पवित्र आत्मा क्या करता है?'' पर अगले एक भाग में लेख देखें। [19]हिन्दी बाइबल में इन दो आशिषों को इसी प्रकार दर्शाया गया है। [20]''पहले से ही ठहराया गया'' यूनानी मिश्रित शब्द से अनुवाद किया गया है। बहुत पहले ही, अपनी योजनाओं और उद्देश्यों के एक भाग के रूप में, परमेश्वर ने यीशु को मसीह ''ठहराया।'' ''तुम्हारे लिए'' इसे व्यक्तिगत कार्य बना देता है: पतरस अपने सुनने वालों को बता रहा था कि परमेश्वर ने यह विशेष रूप से *उनके लिए* किया।

[21]ऐसा कोई संकेत नहीं है कि इस पाप भरी पृथ्वी पर कभी आध्यात्मिक ''स्वर्ण युग'' का अस्तित्व हो। वास्तव में, यीशु ने एक बार आश्चर्य व्यक्त किया कि उसके आने पर पृथ्वी पर विश्वास होगा भी (लूका 18:8)। [22]दृढ़ता से इसकी शिक्षा देने वाले सांकेतिक पदों को अक्षरश: ले लेते हैं। [23]बाइबल से सम्बन्धित व्याख्या के लिए एक आधारभूत प्रश्न है कि ''जिन्होंने ये बातें सबसे पहले सुनीं, उनके लिए इसका क्या अर्थ था?'' [24]मसीही बनने के बाद, सुनने और सीखने में लगे रहने से, उनकी मिथ्या धारणाएं दूर हो जानी थीं–जैसे राज्य के बारे में प्रेरितों की गलतफहमियां दूर हो गई थीं। [25]मैं विशेषकर शब्द ''न्यायसंगत'' का प्रयोग करता हूं, क्योंकि मसीह से सम्बन्धित उनकी सभी आशाएं और सपने साकार नहीं होने थे। उनकी अनेक (यदि अधिकतर नहीं) आशाएं और सपने भविष्यवक्ताओं की मसीह के बारे में कही गई बातों की अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं के अनुसार व्याख्या करने की अनुमति देने का परिणाम थीं। पतरस ने ''सब बातों का सुधार'' को ''[वास्तव में] परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुख से बात की'' तक सीमित कर दिया।[26]पतरस एक राष्ट्रीय आशा को व्यक्तिगत आशा में बदल रहा था। [27]''सब बातों का सुधार'' यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के काम से आरम्भ हो गया, जो मसीह का मार्ग तैयार करने के लिए आया था (ध्यान दें मलाकी 3:1; 4:5, 6; मत्ती 17:11, 12; मरकुस 9:12, 13)। यीशु के बलिदान द्वारा पुरुषों और स्त्रियों के प्रभु की ओर मुड़ने से ''सुधार'' जारी रहता है (इफिसियों 2:16–18)। तथापि, सभी बातों के अन्तिम और पूरे सुधार के लिए, हमें प्रभु की वापसी की प्रतीक्षा करनी होगी। [28]जिसकी हमें अब अधिक चिन्ता है, वास्तव में वह सुधार के योग्य नहीं है। एक दिन हम देखेंगे कि ऐसी चिन्ताओं का अनन्त योजना में महत्व नहीं है। [29]इसे व्यक्तिगत बना लें: किसी ने सेहत खोई; उसमें सुधार हो जाएगा। किसी ने सम्पत्ति खोई; उन्हें स्वर्ग में धन मिलेगा। किसी ने मित्र और प्रियों को खोया; वे स्वर्ग में परमेश्वर, मसीह, पवित्र आत्मा, स्वर्गदूतों, और संतों [पवित्र लोगों] के साथ होंगे। [30]यहूदा 14, 15 में हनोक को भविष्यवक्ता कहा गया है, परन्तु आमतौर पर यहूदी लोग मूसा को पहला और सबसे बड़ा भविष्यवक्ता मानते थे। इम्माऊस के मार्ग में दो जनों को बताते हुए, यीशु ने भी ''मूसा से और सब भविष्यवक्ताओं से'' आरम्भ किया (लूका 24:27)।

[31]अधिकतर हवाले व्यवस्थाविवरण 18:15, 18, और 19 से लिए गए हैं परन्तु उद्धरण के अन्त का वाक्यांश लैव्यव्यवस्था 23:29 से है। लैव्यव्यवस्था और व्यवस्थाविवरण दोनों मूसा ने ही लिखे। [32]व्यवस्थाविवरण 18 में मूसा लोगों को बता रहा था कि वे परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए कनानियों की तरह जादू के कामों की ओर न मुड़ें। बल्कि, परमेश्वर अपनी इच्छा को उन पर प्रकट करने के लिए सदा के लिए अपना एक प्रतिनिधि देगा; जैसे उसने मूसा को खड़ा किया वैसे ही वह अपने लोगों को सिखाने के लिए ''एक नबी को उत्पन्न करेगा।'' परमेश्वर ने अपना वायदा पूरा किया; उसने कभी भी अपने लोगों को आत्मा की प्रेरणा से अगुआई देने के लिए अपने वक्ता से वंचित नहीं किया। बेशक, मूसा ऐसा विरला व्यक्ति था, जिसे इस्राएली मानते थे कि अंतरिम भविष्यवक्ता केवल मूसा के वायदे का कुछ भाग ही पूरा करते थे। इस प्रकार उनका मानना था कि वह ''नबी'' अभी आने वाला था। [33]देखिए 13:20. शमूएल को कई बार ''अलिखित नबियों में पहला'' कहा जाता है। [34]देखिए 1 शमूएल 13:14; 15:28; 16:13; 28:17. [35]कुछ लेखक चिन्तित हैं क्योंकि उन्हें पुराने नियम के प्रत्येक भविष्यवक्ता में मसीह के लिए विशेष हवाला नहीं मिल पाता। ऐसी चिन्ता अनावश्यक है। प्रत्येक भविष्यवक्ता ने मसीह के आने के लिए अपना अनुपम योगदान दिया है। इसी कारण यीशु ने, ''मूसा से और *सब* भविष्यवक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से अपने विषय की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया'' (लूका 24:27)। [36]यह पुराने नियम का एक और बड़ा वायदा था जिसमें मसीही युग में अन्यजातियों के समावेश का पूर्वानुमान था। यद्यपि, पतरस को इसकी समझ नहीं थी। यदि वह किसी भी तरह

इस वायदे के बारे में विचार करता, तो उसने इसे इन शब्दों के साथ मान्यता देनी थी कि ''यदि वे पहले यहूदी बनें।'' [37]उद्धार ''*पहले* तो यहूदी, *फिर* यूनानी के लिए'' था (रोमियों 1:16)। 13:45, 46; रोमियों 2:9, 10 भी देखिए। [38]यह केवल इस्राएल के लिए ही सत्य नहीं बल्कि भारत और प्रत्येक देश के लिए भी सत्य है जहां पर यह पुस्तक पढ़ी जाती है। [39]यद्यपि 3:12 केवल पतरस के प्रचार का ही उल्लेख करता है, परन्तु 4:2 यह भी कहता है कि ''*वे* लोगों को सिखाते थे।''